☛ रौशन पाठक

दिल और जला ले मेरा

क्या दिल नहीं भरा तेरा मुझे प्यार के ऑसू रुला के
कि जला रही हो दिल मेरा, मेरी बेवशी पै मुस्कुरा के ।।

दिल और जला ले मेरा,
किसी और से मोहब्बत करके ।

मेरे दिल पे ठोकर मारी,
और के दिल को जहॉ बनाया ।
अब दिल में आग लगाती हो,
ख्वाबों मे मेरे आ–आ के ।।
दिल और जला .....

मेरा हाथ ना थामा तुने,
चली गई तु मुझसे मुकड़के ।
अब मुस्काती हो देख मुझे,
किसी और का हाथ पकड़के ।।
दिल और जला .....

मेरी राहें सुनी करके,
और के राह को मुकाम बनाया ।
क्या मिलता है ? अब इठला कर,
रस्ते से मेरे गुजरके ।।
दिल और जला .....

अब मुझसे क्या लेना है,
बचा क्या है तुझसे बिछड़के ।
ले–ले बची सॉसे भी जो है,
चैन आये मुझको भी मरके ।।
दिल और जला .....